ओ३म्

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

का

संक्षिप्त-विवरण

(अक्तूबर १९८३ तक)

स्वर्गीय श्री रामलाल जी कपूर
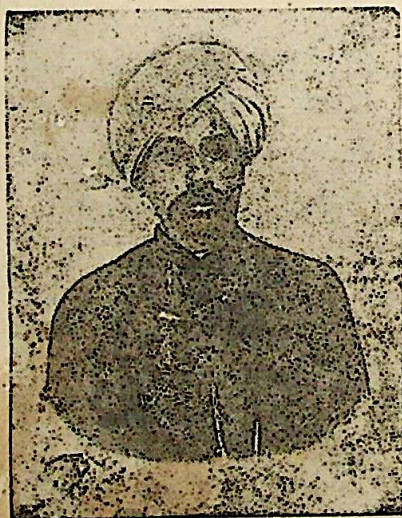
जिनकी स्मृति में रामलाल कपूर ट्रस्ट स्थापित हुआ

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

का

संक्षिप्त विवरण

ट्रस्ट की स्थापना—२६ फरवरी १९२८ को अमृतसर निवासी माननीय श्री रामलाल जी कपूर के देहावसान के पश्चात् उनके सुपुत्रों—सर्वश्री रूपलाल जी कपूर, हंसराज जी कपूर, ज्ञानचन्द जी कपूर तथा प्यारेलाल जी कपूर—ने अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति को स्थायी रखने के लिए, उन की इच्छा का आदर करते हुए, यह धर्मार्थ ट्रस्ट आचार्यवर श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सहयोग से स्थापित किया।

ट्रस्ट के उद्देश्य—प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण, रक्षा तथा प्रचार एवं भारतीय संस्कृति, भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा।

ट्रस्ट के अधिकारी तथा सदस्य

प्रधान—ट्रस्ट की स्थापना के समय स्वर्गीय महात्मा श्री हंसराज जी प्रधानपद पर प्रतिष्ठित किये गये। उनके स्वर्गवास के पश्चात् स्वर्गीय पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु प्रधान बने। सन् १९६४ में उन के निधन के वाद क्रमशः स्वर्गीय पं० भगवद्दत्त जी बी० ए० रिसर्चस्कालर तथा स्वर्गीय वैद्य पं० रामगोपाल जी शास्त्री आजीवन इस पद को सुशोभित करते रहे। ट्रस्ट के वर्त्तमान प्रधान हैं—पं० युधिष्ठिर मीमांसक।

मन्त्री—आरम्भ में स्वर्गीय श्री रामलाल जी कपूर के ज्येष्ठ पुत्र स्वर्गीय श्री रूपलाल जी कपूर ने ट्रस्ट के मन्त्री पद का कार्यभार सम्भाला। उन के निधन के पश्चात् उन के छोटे भाई स्वर्गीय श्री हंसराज जी कपूर ट्रस्ट के मन्त्री बने। उन के स्वर्गवासी हो जाने पर उन के कनिष्ठ भ्राता श्री प्यारेलाल जी कपूर मन्त्री बनाये गये, जो वर्त्तमान काल में इस पद को सम्भाल रहे हैं।

सदस्य—इस ट्रस्ट के आरम्भिक ट्रस्टी थे—सर्व श्री महात्मा हंसराज जी (प्रधान), रूपलाल जी कपूर (मन्त्री), हंसराज जी कपूर, ज्ञानचन्द जी कपूर, प्यारेलाल जी कपूर, सर्वदयाल जो एडवोकेट, छज्जूमल जी भल्ला, डा० गुरुवख्शराय जी, पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, प० भगवद्दत्त जी बी० ए० रिसर्चस्कालर, प्रो० शिवदयाल जी । उसके पश्चात् आगे लिखे महानुभाव अपने जीवन काल में ट्रस्टी रहे थे—सर्व श्री रामरखामलजी, वैद्य राम गोपाल जी शास्त्री (प्रधान), महात्मा आनन्द स्वामी जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी, सुरेन्द्र कुमार जी कपूर, हरिश्चन्द्र जी बत्रा। वर्त्तमान ट्रस्टी हैं—सर्व श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक (प्रधान), वहालगढ़ (सोनीपत, हरयाणा); प्यारे लाल जी कपूर (मन्त्री), अमृतसर; शान्ति स्वरूप जी कपूर (उपमन्त्री) दिल्ली; सुबोध कुमार जी कपूर, कानपुर; धर्मेन्द्र कुमार जी कपूर, वम्बई; चौ० प्रतापसिंह जी, करनाल; वैद्य कृष्ण गोपाल जी, दिल्ली; ओंप्रकाश जी सुनेजा, दिल्ली; स्वा० मुनीश्वरानन्द जी, गाजियावाद; नरेन्द्रकुमार जी कपूर, सोनीपत। इनके अतिरिक्त वर्त्तमान काल में मनोनीत सदस्य हैं—सर्व श्री देवेन्द्रकुमार जी कपूर, वम्वई; ब्रह्मदेव जी कपूर, दिल्ली; प्रवीण कुमार जी कपूर, वहादुरगढ़ (हरयाणा), रणवीर जी कपूर, कानपुर।

ट्रस्ट की प्रवृत्तियां

ट्रस्ट के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आचार्यवर श्री पं० ब्रह्मदत्त जो जिज्ञासु के संचालन में अमृतसर में एक पुस्तकालय और संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गई थी। कुछ वर्ष पश्चात् श्री जिज्ञासु जी अपने छात्रों को साथ लेकर काशी चले गये। वहां वे चार वर्ष तक स्वयं मीमांसा आदि शास्त्रों का विशेष अध्ययन तथा छात्रों का अध्यापन करते रहे। उनके काशी से लौटने पर लाहौर में रावी नदी के पार पुस्तकालय और विद्यालय की व्यवस्था की गई। इसके साथ प्रकाशन कार्य भी आरम्भ किया गया। सन् १९५० में मोती झील, वाराणसी में पुनः ट्रस्ट की प्रवृत्तियां नये उत्साह से आरम्भ हुईं, जो सन् १९६४ के अन्त में श्री जिज्ञासु जी के देहावसान तक निर्बाध रूप से चलती रहीं। श्री जिज्ञासु जी के निधन से ट्रस्ट की प्रवृत्तियों में स्वल्पकालिक वाधा उपस्थित हुई। सन् १९६७ में सोनीपत में अपने प्रेस के स्थापन और सन् १९७० मे ट्रस्ट-प्रवृत्तियों के काशी से वहालगढ़ (हरयाणा) में स्थानान्तरण के पश्चात् ट्रस्ट के कार्यों की मात्रा

एवं गुण में विशेष वृद्धि हुई। ट्रस्ट के लाहौर काल, वाराणसी काल तथा बहालगढ़ काल में सम्पन्न हुए प्रमुख कार्यों का संक्षिप्त विवरण आगे प्रस्तुत किया जाता है—

(१) **प्रकाशन**—ट्रस्ट अपने जन्म-काल से ही प्रकाशन कार्य में प्रवृत्त हो गया था और तव से आज तक निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। लाहौर-काल (सन् १९२८ से सन् १९४७ तक) के आरम्भिक लगभग तीन वर्षों (सन् १९२८ से १९३१) तक ट्रस्ट ने ऋषि दयानन्द रचित **सन्ध्योपासना, पञ्चमहायज्ञविधि** जैसे तीन-चार छोटे-छोटे ग्रन्थ प्रकाशित किये। वे ग्रन्थ प्रचारार्थ लागत से भी कम मूल्य पर वेचे गये। इस काल की मध्य अवधि (सन् १९३२ से १९३५ तक) में **आर्याभिविनय, भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय** स्वोपज्ञ विवरण सहित लगभग डेढ काण्ड, श्री स्वा० भूमानन्द जी कृत **वैदिक एन्थोलोजी**—इन विशिष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। इस काल के अन्तिम लगभग दस वर्ष (सन् १९३६ से १९४७ तक) में ट्रस्ट ने अपने प्रकाशन क्षेत्र का विस्तार किया। इस अवधि में जिन विशिष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ उनके नाम हैं—**यजुर्वेदभाष्य विवरण** दस अध्याय, **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन** और **वैदिक निबन्धमाला** प्रथम भाग के अन्तर्गत पांच छः वेद विषय लघु ग्रन्थ।

अगस्त १९४७ में देश-विभाजन के समय लाहौर में दस हजार रुपये मूल्य का ट्रस्ट की पुस्तकों का स्टाक जला दिया गया। उस समय आर्थिक दृष्टि से ट्रस्ट इतना क्षीण हो गया था कि लगभग तीन वर्ष तक कुछ भी कार्य नहीं कर सका। अन्ततः सन् १९५० में ट्रस्ट किसी प्रकार पुनः अपने कोर्य में प्रवृत्त हुआ। इस का श्रेय झरिया निवासी वैदिक धर्म प्रेमी **श्री बाबू अर्जुनलाल जी अग्रवाल** को है, जिन्होंने दो वर्ष तक पांच सौ रुपये मासिक सहायता देकर श्री जिज्ञासु जी को आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर दिया। वाराणसी में ट्रस्ट को अपनी प्रवृत्तियां पुनः आरम्भ करने का सामर्थ्य प्रदान करने के लिए ट्रस्ट श्री अग्रवाल जी का सदा आभारी रहेगा। वाराणसी में ट्रस्ट अपने लक्ष्य के अनुसार वैदिक वाङ्मय के प्रकाशन में पूरे उत्साह से प्रवृत्त हो गया। **वाराणसी-काल** (सन् १९५० से १९७० तक) में पूर्व-प्रकाशित ग्रन्थों में से वाक्यपदीय तथा वैदिक एन्थोलोजी को छोड़कर सभी ग्रन्थ पुनः परिष्कृत रूप में छापे गये। इस काल में प्रकाशित किये जाने वाले प्रमुख ग्रन्थ हैं—**अष्टाध्यायी मूल,** पं० ब्रह्मदत्त

जी जिज्ञासु रचित संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतमविधि प्रथम भाग, पं० अखिलानन्द जी प्रणीत हिन्दी व्याख्या सहित वाल्मीकीय रामायण के पांच काण्ड, पं० भगवद्दत्त जी कृत निरुक्त-हिन्दी व्याख्या, पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक कृत वैदिक-स्वर-मीमांसा तथा वैदिक-छन्दोमीमांसा, पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु प्रणीत अष्टाध्यायी-भाष्य प्रथम भाग और संस्कार विधि।

दिसम्बर १९६४ में श्री जिज्ञासु जी के स्वर्गवास के पश्चात् कार्यभार श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक को सौंपा गया। वाराणसी का जल-वायु श्री मीमांसक जी के अनुकूल नहीं था। अतः श्री मीमांसक जी समय-समय पर वाराणसी जाकर ट्रस्ट के कार्यों का निर्देश-निरीक्षण करते थे और पं० विजयपाल जी अध्यापन-प्रकाशन आदि कार्यों को पूर्ववत् संचालित करते थे। यह व्यवस्था पांच वर्ष तक चलती रही। इसी अवधि में सन् १९६७ के उत्तरार्ध में ट्रस्ट ने सोनीपत में अपना मुद्रणालय आरम्भ कर दिया और श्री मीमांसक जी सोनीपत में रहकर प्रकाशन की व्यवस्था करने लगे। २२ फरवरी १९७० को ट्रस्ट का पुस्तकालय, विद्यालय तथा वेदवाणी कार्यालय वाराणसी से बहालगढ़ (हरयाणा) स्थानान्तरित कर दिया गया। इसके कुछ काल पश्चात् प्रेस भी सोनीपत से बहालगढ़ ले जाया गया।

बहालगढ़-काल (१९६७–) के पिछले लगभग सोलह वर्षों में ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ हैं—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्थूलाक्षर संस्करण, सत्यार्थप्रकाश (सस्ता संस्करण) सत्यार्थप्रकाश शताब्दी संस्करण (दो संस्करण), संस्कारविधि शताब्दी संस्करण, पूना-प्रवचन, आर्याभिविनय (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ, दयानन्दीय लघु ग्रन्थ संग्रह, अष्टाध्यायीभाष्य, द्वितीय, तृतीय भाग, संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि द्वितीय भाग, ध्यानयोग-प्रकाश, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत साहित्य को देन, वाल्मीकीय रामायण छठा काण्ड हिन्दी व्याख्या सहित, विदुरनीति, वैदिक नित्यकर्मविधि अर्थ सहित तथा मूल, ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन परिवर्द्धित संस्करण के दो भाग। और ऋषि दयानन्द को लिखे गये पत्र और विज्ञापन दो भाग इनके अतिरिक्त आठ-दस छोटे छोटे ग्रन्थ वेदवाणी के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित किये गये। पूना-प्रवचन, अनासक्तियोग संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि के प्रथम भाग का अंग्रेजी अनुवाद और शुक्रनीतिसार का श्री स्वामी

जगदीश्वरानन्द जी कृत भी ट्रस्ट के स्थापक परिवार के सहयोग से प्रकाशित हुए हैं ।

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा अजमेर से प्रकाशित लगभग आधा दर्जन ग्रन्थ भी लागत मूल्य पर उनसे खरीद कर ट्रस्ट-प्रकाशन के अङ्ग बना दिये गये । आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के शिष्य पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ (वैद्य) ने लगभग २०-२५ वर्ष की साधना से जो नाडीतत्त्वदर्शन, विष्णु सहस्रनाम सत्यभाष्य चार भाग तथा सत्यग्रहनीति काव्य नामक ग्रन्थ लिखे थे, उन्हें छपवाकर ट्रस्ट को भेंट कर दिया । वे ग्रन्थ अब ट्रस्ट प्रकाशन के अङ्ग हैं ।

ट्रस्ट के सहयोग से अनेक धर्मप्रेमी महानुभावों ने अपने धर्मार्थ ट्रस्टों के द्वारा निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन कराया । इन का सम्पादन आदि कार्य श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा पं० विजयपाल जी ने किया—

१. रा० ब० चौधरी नारायणसिंह प्रतापसिंह धर्मार्थ ट्रस्ट करनाल की ओर से—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेद-भाष्य के तीन भाग ।

२. द्राक्षादेवी प्यारे लाल ट्रस्ट (दिल्ली) की ओर से—महाभाष्य प्रथम-द्वितीय अध्यायों की हिन्दी व्याख्या तीन भाग और संस्कृत धातुकोष ।

सावित्री देवी बागड़िया ट्रस्ट (कलकत्ता) की ओर से—गोपथ ब्राह्मण मूल और निरुक्तश्लोकवार्त्तिक, ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन, ध्यानयोगप्रकाश (नया संस्करण)

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने ट्रस्ट के सीमित सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए कुछ भाग स्वयं प्रकाशित किये, जिन के नाम हैं—१. मीमांसा-शाबरभाष्य हिन्दी व्याख्या सहित तीन भाग, २. ऋक्सर्वानुक्रमणी हिन्दी व्याख्या, ३. दर्शपौर्णमासेष्टि, ४. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास तीन भाग (तृतीय संस्करण), ५. माध्यन्दिन पदपाठ तैत्तिरीय संहिता (मूल-मात्र), बौधायन श्रौतसूत्र (दर्शपूर्णमास) दो प्राचीन व्याख्या सहित, ऋ० द० सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास (परिवर्धित संस्करण) आदि । इन ग्रन्थों का प्रकाशन भी ट्रस्ट के कार्यों के अन्तर्गत ही समझना चाहिये ।

इस समय रामलाल ट्रस्ट और अन्य सहयोगियों के प्रकाशनों की संख्या लगभग १०० है, जिनमें वेद-कर्मकाण्ड-अध्यात्म-व्याकरण-निरुक्त-

इतिहास-राजनीति-आयुर्वेद-वैदिक सिद्धान्त आदि विषयों के ग्रन्थ सम्मिलित हैं। अपने शुद्ध-सुन्दर-शोधपूर्ण संस्करणों के लिए ट्रस्ट प्रख्यात हो चुका है। अनेक ग्रन्थों के कई-कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, जिन की लाखों प्रतियां पाठकों के हाथों में पहुंच चुकी हैं।

(२) **शिक्षण**—वैदिक वाङ्मय की रक्षा के उद्देश्य से ट्रस्ट की दूसरी महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है—आर्ष पाठविधि के अनुसार शिक्षा की व्याख्या। इस कार्य में ट्रस्ट ने अपने सीमित साधनों के अनुरूप यथेष्ठ अंशदान किया है। आरम्भ में आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी को ट्रस्ट के कार्यों का संचालन सौंपा गया था। आचार्यवर सन् १९२० से ही 'विरजानन्द आश्रम' के नाम से आर्षपाठविधि के अनुसार विद्यालय चला रहे थे। उनके ट्रस्ट के साथ सम्बद्ध होने पर स्वभावतः 'विरजानन्द आश्रम' भी ट्रस्ट के साथ सम्बद्ध हो गया। यह विद्यालय अमृतसर-काशी-लाहौर तथा देश विभाजन के पश्चात् वाराणसी में निर्वाध रूप से चलता रहा। वाराणसी में विद्यालय का नाम **'पाणिनि महाविद्यालय'** रख दिया गया और आश्रम 'विरजानन्द आश्रम' के नाम से ही चलता रहा। आजकल पाणिनि महाविद्यालय एवं आश्रम बहालगढ़ में ही चल रहे हैं। इस विद्यालय में आर्ष प्रणाली के अनुसार अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरुक्त-कल्प-दर्शन तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के पश्चात् आचार्य युधिष्ठिर जी मीमांसक की अध्यक्षता में श्री पं० विजयपाल जी अध्यापन कार्य कर रहे हैं। स्वयं आचार्य मीमांसक जी उच्चश्रेणी के छात्रों का वैदिक वाङ्मय के अध्ययन एवं शोध में मार्ग निर्देश करते हैं। इस समय विद्यालय में त्रिपुरा, विहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरयाणा, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तमिलनाडु आदि लगभग सभी प्रान्तों के छात्र विद्याध्यन करते रहे हैं, सम्प्रति १० छात्र विभिन्न प्रान्तों के अध्ययन कर रहे हैं। इन के अतिरिक्त दो छात्राएं भी अध्ययन कर रही हैं, जो राजस्थान एवं आन्ध्र प्रदेश से आई हैं। पाणिनि महाविद्यालय का सम्पूर्ण व्यय ट्रस्ट वहन करता है। ट्रस्ट की ओर से छात्रों को छात्रवृत्तियां तथा ट्रस्ट से प्रकाशित व्याकरण के ग्रन्थ दिये जाते हैं और समय-समय पर सूती-ऊनी वस्त्रों की व्यवस्था भी की जाती है। छात्रों की सहायतार्थं कतिपय अन्य महानुभाव भी सहायता कर रहे हैं।

विरजानन्द आश्रम तथा पाणिनि महाविद्यालय में अध्ययन करके

विविध व्यवसायों में लगे हुए आचार्यवर श्री जिज्ञासु के शिष्य-प्रशिष्यों की शृङ्खला बहुत लम्बी है। निदर्शनार्थ कुछ विद्वानों के नाम प्रस्तुत किये जाते हैं, जो शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत हैं—

१. श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक—आप आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के आरम्भिक शिष्यों में से हैं। इस समय आप ट्रस्ट के प्रधान पद को अलंकृत करते हैं। आपने वेद-व्याकरण-दर्शन-इतिहास आदि विषयों पर अनेक प्रौढ ग्रन्थों की रचना की है। आपके कई ग्रन्थ प्रदेश-सरकारों द्वारा पुरस्कृत हुए हैं। आप कुछ काल तक इवनिंग संस्कृत कालेज भुवनेश्वर (उडीसा प्रशासन द्वारा संचालित) के प्रिंसिपल भी रहे हैं। भारत के राष्ट्रपति आप को 'राष्ट्रीय पण्डित' की उपाधि से सम्मानित कर चुके हैं।

२. श्री पं० याज्ञवल्क्य जी (गुरु)—आप श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक के सहपाठी हैं। आप अत्यन्त मेधावी, मितभाषी तथा मूक समाज सेवक हैं। आप अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं विद्वत्ता के कारण आज भी अपने विशिष्ट सामाजिक क्षेत्र में 'गुरु जी' के नाम से विख्यात हैं।

३. श्री पं० इन्द्रदेव जी आचार्य—आप व्याकरण तथा दर्शन विषय के प्रौढ विद्वान् एवं निर्भीक वक्ता थे। आप लगभग तीस वर्ष तक घनश्यामदास वैदिक विद्यालय देवरिया (उत्तर प्रदेश) के प्रधान आचार्य पद पर आसीन रहे थे। तीन वर्ष पूर्व आप का स्वर्गवास हो गया।

४. श्री पं० भद्रसेन जी आचार्य—आप अनेक वर्ष तक अजमेर में संस्कृत विद्यालय तथा योगशिक्षणालय का संचालन करते रहे। कई वर्ष पूर्व आप का शरीरान्त हो गया।

४. श्री पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ आयुर्वेदाचार्य—आप अनेक वर्ष तक आयुर्वेद का अध्यापन करते रहे हैं। इस समय भिवानी (हरयाणा) में चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने आयुर्वेद-अध्यात्म-काव्य विषयों पर उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है।

६. श्री पं० धर्मदेवजी निरुक्ताचार्य—आपने कई संस्कृत विद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। आप वैदिक यन्त्रालय, अजमेर में अनेक वर्ष शोध करते रहे हैं। अवकाश प्राप्त करके इस समय आप अजमेर में रह रहे हैं।

७. श्री पं० वाचस्पति जी आचार्य—आप कई दशकों से नौनेर, जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में संस्कृत विद्यालय चला रहे हैं।

८. श्री पं० ज्योतिःस्वरूप जी आचार्य—आप पहले आर्ष गुरुकुल निक्की सूईयां अमृतसर के आचार्य थे। देश-विभाजन के पश्चात् आर्ष गुरुकुल एटा के आचार्य नियुक्त हुए। आपके अनेक योग्य शिष्य विभिन्न शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। दो वर्ष पूर्व आप का स्वर्गवास हो गया।

९. श्री पं० यशःपाल जी—आप दादरी, जिला बुलन्दशहर (उत्तर-प्रदेश) में चिकित्सा कार्य कर रहे हैं।

१०. श्री वाचस्पति जी—आप जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) की राजनीति में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। आप सहकारी बैंक के प्रधान भी रहे हैं।

११. डा० चन्द्रकान्त जी मुदालियर—आप मद्रास (तमिलनाडु) में हिन्दी विभाग के सहायक संचालक (डायरेक्टर) पद पर कार्य कर रहे हैं और वैदिक साहित्य के प्रचार में विशेष रुचि रखते हैं। आप इस समय आर्यसमाज, मद्रास के प्रधान हैं। आप का विशिष्ट शोध-ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

१२. डा० देवप्रकाश जी पातञ्जल—आप बड़े उत्साही वैदिक विद्वान् थे। आप ने सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) में पाणिनि महाविद्यालय की स्थापना की थी। वर्षों तक आप दयालसिंह कालेज, दिल्ली में प्रवक्ता रहे थे। आपने वेद तथा व्याकरण विषय पर ग्रन्थों का प्रणयन किया था। कई वर्ष पूर्व आप का असामयिक निधन हो गया।

१३. डा० मुनीश्वर देव जी—आप वैदिक वाङ्मय के प्रौढ विद्वान् हैं। आप अनेक वर्षों से विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर (पंजाब) में शोध तथा सम्पादन कार्य कर रहे हैं।

१४. डा० कपिलदेव जी—आप वेद-व्याकरण-दर्शन के गम्भीर विद्वान् हैं। आपने पाणिनीय गणपाठ पर महत्त्वपूर्ण शोध करके उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना की है। आपकी अनेक शोधपूर्ण रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। हैं। आप कुछ काल तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। इस समय आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं।

१५. डा० वीरेन्द्र जी—आप वेद-वेदाङ्ग-दर्शन के उच्चकोटि के विद्वान् हैं। आपने व्याकरण दर्शन विषय पर अद्भुत शोधग्रन्थ का प्रणयन किया

है। आप के शोधपूर्ण लेख एवं व्याख्याएं उच्चस्तरीय शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इस समय आप पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय (विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान) होशियारपुर में प्रवक्ता हैं।

१६. **श्री ओंप्रकाश जी**—आप व्याकरण के विद्वान् हैं। इस समय लन्दन में अध्यापन करते हैं।

१७. **डा० सत्यदेव जी**—आप व्याकरण, दर्शन आदि के विद्वान् हैं। इस समय मसूरी कालेज में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं।

१८. **श्री पं० राजेन्द्र कुमार जी**—आप व्याकरण के विद्वान् हैं। इस समय ढावड़ी (राजस्थान) में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

१९. **पं० सत्यप्रिय जी**—आप की रुचि अध्यात्म विषयों में है. स्वाध्यायशील विद्वान् हैं। आप आर्यसमाजों में आध्यात्मिक प्रवचन करते हैं। आपका आवास स्थल लाडवा (हरयाणा) है।

२०. **श्री पं० शंकरदेव जी**—आप कुछ काल तक विरजानन्द आश्रम लाहौर में अध्ययन करके गुरुकुल काङ्गड़ी में चले गये थे। वेदालङ्कार तथा एम० ए० करने के पश्चात् आप सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगे। आप कर्णाटक से कई बार लोकसभा के सदस्य चुने गये। आपने कई पुस्तकों की रचना की है। इस समय हैदराबाद में रहते हैं।

२१. **श्री पं० रामचन्द्र जी**—आप अनेक वर्ष तक आर्ष गुरुकुल हरदुआगंज (उत्तरप्रदेश) के आचार्य रहे। इस समय गांधीधाम (गुजरात) में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

२२. **श्री रङ्गाचार्य जी**—आप व्याकरण तथा आयुर्वेद (होम्योपैथी) के विद्वान् है। इस समय हैदराबाद में सेवा कार्य्यरत हैं।

२३. **श्री पं० विद्याभास्कर जी**—आप सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेते है। इस समय तक आप आर्यसमाज करौल बाग दिल्ली के पुरोहित पद पर कार्य करते रहे हैं। लम्बी बीमारी के पश्चात् इसी वर्ष आप का निधन हुआ है।

२४. **श्री स्वामी मानानन्द जी (पं० ब्रह्मदेव जी)**—आप व्याकरण के विद्वान् हैं। आप ने माडौटी (हरयाणा) में आर्ष गुरुकुल की स्थापना की है। साथ ही आप कन्या गुरुकुल लोवाकलां (हरयाणा) के प्रबन्धक भी हैं।

२५. **डा० विजयपाल जी**—आप इस समय वहालगढ़ में पाणिनि महाविद्यालय के आचार्य हैं।

२६. **पं० व्रतपाल जी शास्त्री**—प्रारम्भ से ही आप की विशेष रुचि सामाजिक कार्यों में रही है। आप कई वर्ष से हैदराबाद में वैदिक धर्म तथा वाङ्मय का प्रचार कर रहे हैं। आजकल आप ने वैदिक-सृष्टि-विज्ञान के प्रचार का बीड़ा उठा रखा है।

२७. **श्री पं० खेमचन्द जी**—आप की विशेष रुचि आध्यात्मिक विषयों में थी। आप ने चांदपुर (उत्तर प्रदेश) में वेदमन्दिर की स्थापना की थी। कई वर्ष पूर्व आप का निधन हो गया।

२८. **डा० सुद्युम्न आर्य**—आप वैदिक वाङ्मय-बौद्धदर्शन-आधुनिक भाषाविज्ञान के विद्वान् हैं। आप गुरुकुल रुद्रपुर (उत्तर प्रदेश) के आचार्य रहे हैं। इस समय आप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वलिया (उत्तर प्रदेश) में संस्कृत-प्रवक्ता हैं।

२९. **श्री पं० धर्मानन्द जी**—आप व्याकरण-दर्शन-वेद के विद्वान् हैं। आप के अनुज श्री दण्डी नरसिंह ने आपके सहयोग से हैदराबाद में पाणिनि महाविद्यालय की स्थापना की है। आपने 'सरलतमविधि' पद्धति से शिविरों का आयोजन करके संस्कृत के प्रचार का महान् कार्य किया है।

३०. **श्री पं० याज्ञवल्क्य जी**—आप व्याकरण का अध्ययन करके योग-मार्ग में प्रवृत्त हो गये। आप ने झाला (हिमालय) में आश्रम की स्थापना की है।

छात्रावर्ग—आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी से अनेक छात्राओं ने भी अध्ययन किया था, उनमें से प्रमुख ये हैं—

१. **श्री उमानन्द जी सरस्वती**—आपने व्याकरण-निरुक्त का अध्ययन किया था। आप की विशेष रुचि योग में रही है। इस समय आप वम्बई में योग-साधना में लगी हुई हैं।

२. **श्री डा० पुष्पा जी**—आप व्याकरण आदि विषयों की विदुषी हैं। आपने वाराणसी में मातृमन्दिर नामक कन्याविद्यालय की स्थापना की है।

३. **श्री डा० प्रज्ञादेवी जी**—आपने आर्ष पाठ विधि के अनुसार अध्ययन करके वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त की है। आप वाराणसी में जिज्ञासु स्मारक पाणिनीय कन्या

महाविद्यालय की स्थापना करके उसका संचालन उत्तम रीति से कर रही हैं।

४. श्री मेधाकुमारी जी—आप डा० प्रज्ञादेवी की छोटी वहिन हैं। आप व्याकरण-निरुक्त की विदुषी हैं। आप के सहयोग से उपर्युक्त कन्या महाविद्यालय का सुचारु संचालन हो रहा है।

५. श्री शान्ति कुमारी जी—आपने व्याकरण आदि का अध्ययन करने के पश्चात् अपने पिता श्री पं० ब्रह्मदेव जी (वर्त्तमान स्वा० मानानन्द जी) के सहयोग से कन्या गुरुकुल लोवाकलां की स्थापना की है और वहीं अध्यापन करती हैं।

आचार्यवर श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु के निधन के पश्चात् भी उनकी प्रज्वलित ज्योति निरन्तर प्रकाश फैला रही है। पाणिनि महाविद्यालय, वाराणसी तथा बहालगढ़ से जिज्ञासु-ज्ञान-ज्योति को लेकर निकलने वाले जिज्ञासु-प्रशिष्यों की शृङ्खला लम्बी हो रही है। उसकी कुछ कड़ियां ये हैं—

१. डा० प्रशस्य मित्र जी शास्त्री—आपने महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य का उवट-महीधर के भाष्यों के साथ तुलनात्मक-अध्ययन करके शोध-प्रवन्ध प्रस्तुत किया है। आप इस समय फीरोज गान्धी कालेज, रायवरेली (उत्तर प्रदेश) में प्रवक्ता हैं।

२. श्री पं० सोमदेव जी—आप व्याकरण-निरुक्त का अध्ययन करके 'सरलतम विधि' की पद्धति से संस्कृत प्रचार के कार्य में संलग्न हैं। इस समय आप बम्बई में 'सरलतम विधि' का शिविर चला रहे हैं।

३. श्री पं० राजाराम जी दीक्षित—आपने व्याकरण का अध्ययन किया हैं। इस समय आप महाविद्यालय अतर्रा (वांदा, उत्तर प्रदेश) में संस्कृत के प्रवक्ता है।

४. श्री महात्मा स्वतन्त्रदेव जी—आप व्याकरण का अध्ययन करके अपनी पैतृक गुरु गद्दी पर आसीन हो गये हैं। आप वलिया (उत्तर प्रदेश) में योग तथा अध्यात्म विद्या का प्रचार कर रहे हैं।

५. श्री पं० धर्मदीप जी—आपने व्याकरण का अध्ययन करके लातुर (महाराष्ट्र) में अपना मुद्रणालय स्थापित किया है। सामाजिक कार्यों में आप की विशेष रुचि है।

६. **श्री पं० प्रशान्तकुमार जी**—व्याकरण का अध्ययन करके आप आर्यसमाज में प्रचार का कार्य कर रहे हैं। कुछ समय आप आर्यसमाज, अमृतसर के पुरोहित रहे। अब महाराष्ट्र में अपना स्टेशनरी का व्यवसाय कर रहे हैं।

७. **श्री पं० ओंकार जी**—आप व्याकरण-निरुक्त-दर्शन आदि का अध्ययन करके इस समय बहालगढ़ में ही मुद्रण-शोधन तथा अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

८. **श्री स्वामी अपरोक्षानन्द जी**—गणित शास्त्र में एम० एस० सी० करके आप ने बहालगढ़ में व्याकरण तथा निरुक्त का अध्ययन किया था। इस समय आप गङ्गा बाग गुहा (हिमालय) में योग-साधना में लगे हुए हैं।

९. **श्री पं० बलदेव जी**—बी० एस० सी० करके आपने बहालगढ़ में व्याकरण-निरुक्त-दर्शन का अध्ययन किया था। आप की विशेष रुचि सामाजिक कार्यों में है। इस समय आप अपने ग्राम (उत्तर प्रदेश) में रह कर आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं।

१०. **श्री पं० देवदत्त जी**—आपने व्याकरण का अध्ययन किया है। प्राचीन आयुर्वेद तथा वैदिक धर्म के प्रचार में आपकी विशेष रुचि है। इस समय आप बिहार के आदिवासी क्षेत्र खूटो में आर्यसमाज द्वारा संचालित चिकित्सा सेवा तथा धर्म प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

११. **श्री पं० गणपति जी शर्मा**—व्याकरण का अध्ययन करके आपने गुरुकुल काङ्गड़ी से वेदालंकार किया। आज कल आप बंगलोर (कर्णाटक) में अध्यापन तथा धर्म प्रचार कर रहे हैं।

१२. **श्री पं० द्विजराज जी**—आपने व्याकरण का अध्ययन किया है। आपने रायपुर (मध्य प्रदेश) के समीप ग्राम में संस्कृत विद्यालय की स्थापना की है और वहीं अध्यापन एवं प्रचार कार्य कर रहे हैं।

१३. **अनुसन्धान**—ट्रस्ट अपने उद्देश्य के अनुसार आरम्भ से ही आर्ष वाङ्मय के शोध कार्यों में प्रवृत्त रहा है। इस के अन्तर्गत अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन सम्पादन तथा प्रकाशन ट्रस्ट की ओर से हुआ है। उन में से मुख्य ग्रन्थ ये हैं—

१. यजुर्वेदभाष्य विवरण
२. भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय

३. क्षीरतरङ्गिणी
४. वैदिक स्वर-मीमांसा
५. वैदिक छन्दो-मीमांसा
६. अष्टाध्यायी-भाष्य
७. संस्कारविधि
८. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका
९. सत्यार्थप्रकाश
१०. महाभाष्य हिन्दी व्याख्या
११. शाबरभाष्य हिन्दी व्याख्या
१२. ऋग्वेदभाष्य तीन भाग
१३. गोपथ ब्राह्मण
१४. निरुक्तश्लोक वार्त्तिक
१५. उणादिकोश (ऋ०द० कृत वृत्ति)
१६. बौधायन श्रौत (दर्शपूर्णमास)
१७. ऋग्वेदानुक्रमणी (वेंकट माधव)
१८. कात्यायन गृह्य-सूत्रम्।
१९. तैत्तिरीय संहिता।
२० अष्टाधायी-शुक्लयजुःप्रतिशाख्ययोर्मतविमर्शः।

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने ग्रन्थ लेखन सम्पादन के अतिरिक्त वेद तथा व्याकरण विषय में शोध करने वाले छात्रों की विशेष सहायता की है। समय-समय पर दिल्ली तथा अन्य विश्वविद्यालयों से पी० एच० डी० उपाधि के लिए शोध करने वाले छात्र वहालगढ़ आते रहते हैं। यहां उन्हें ट्रस्ट के पुस्तकालय से यथेष्ट पुस्तकें दी जाती हैं और श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा पं० विजयपाल जी के साथ विचार एवं परामर्श का लाभ प्राप्त होता है। विगत वर्षों में जिन शोध-छात्रों ने लाभ उठाया, उन के नाम हैं—

१. श्री पुष्पा सिंहल (व्याकरण)
२. श्री पुष्पा खन्ना (व्याकरण)
३. श्री तीर्थराज त्रिपाठी (व्याकरण)
४. श्री काशीराम शास्त्री (व्याकरण)
५. श्री रघुवीर मुमुक्षु (व्याकरण)
६. श्री सरस्वती आर्या (वेद)
७. श्री सुदर्शनदेव (शिक्षा)
८. श्री प्रशस्यमित्र (वेद)
९. श्री माया चैनानी (व्याकरण)
१० श्री आभा माथुर (व्याकरण)
११. श्री धर्मवीर (व्याकरण)
१२. श्री सोमदेव (वेद)
१३. शन्नोदेवी (व्याकरण)
१४. बलजीत कौर भसीन (वेद)

(४) **स्वामी सियाराम पुस्तकालय**—पिछले पांच दशकों से ट्रस्ट अपने पुस्तकालय को यथासामर्थ्य समृद्ध कर रहा है। प्रति वर्ष कुछ-न-कुछ नवीन पुस्तकों की वृद्धि हो जाती है। इस समय पुस्तकालय में लगभग दस हजार

पुस्तकें संगृहीत हैं. जिन में सैकड़ों दुर्लभ ग्रन्थ हैं। इस पुस्तकालय में सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक तथा गवेषणा-संबन्धी पत्रिकाओं को दशकों पुरानी फाइलें सुरक्षित हैं। यहां सैकड़ों हस्तलेखों का संग्रह है, जिन में से कई-एक ऐसे हैं जिन को प्रति संसार में एक दो स्थानों पर ही मिल सकती हैं। पुस्तकालय में विद्यमान पुस्तकों का वर्त्तमान मूल्य एक लाख रुपये से अधिक है। यह पुस्तकालय वेद, व्याकरण तथा साहित्य के अन्वेषण तथा प्रकाशन कार्य में अत्यन्त सहायक है। वाराणसी से बहालगढ़ स्थानान्तरित होने पर स्वर्गीय श्री पं० हंसराज जी ने पुस्तकों की सूची तैयार की थी। पिछले वर्षों में पं० विजयपाल जी ने छात्रों की सहायता से नवीन सुविधाजनक कार्ड सूची तथा पुस्तक-पञ्जिका तैयार की।

५. वेदवाणी—ट्रस्ट प्रकाशनों के वाराणसी-काल के आरम्भ में ट्रस्ट ने अपने उद्देश्यों के अनुरूप मासिक पत्रिका 'वेदवाणी' के प्रकाशन का भार अपने ऊपर ले लिया। पिछले पेंतीस वर्ष से यह पत्रिका निरन्तर वैदिक वाङ्मय-धर्म-दर्शन का प्रचार कर रही है। इस पत्रिका में वेद, वैदिक साहित्य, वेदाङ्ग, दर्शन तथा सिद्धान्त विषयक आध्यात्मिक, सामाजिक एवं शोधपूर्ण लेख प्रकाशित किये जाते हैं। गत वर्षों में ऋग्वेदभाषाभाष्य, वाल्मीकीय रामायण, विदुरनीति आदि ग्रन्थ धारावाहिकरूप में इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को भेंट किये गये। आजकल 'अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त' यज्ञों का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है। प्रति वर्ष वेदवाणी का एक विशाल विशेषाङ्क प्रकाशित किया जाता है, जो सामग्री की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। वेदवाणी के सशुल्क ग्राहकों की संख्या एक हजार से कम ही है। और ट्रस्ट को इस से हानि उठानी पड़ती है, फिर भी ट्रस्ट इसे अपने उद्देश्यों की पूर्त्ति के सशक्त साधन के रूप में चला रहा है। वेदवाणी कार्यालय के संचालन का भार पिछले तेईस वर्षों से श्री पं० जीवनराम जी पूरी निष्ठा, श्रद्धा एवं श्रम से सम्भाल रहे हैं। बहालगढ़ स्थानान्तरण के पश्चात् आप के लिए सहयोगी की व्यवस्था की गई है।

६. मुद्रणालय—वाराणसी-काल तक ट्रस्ट को अपने प्रकाशनों के मुद्रण के लिए दूसरे मुद्रणालयों का आश्रय लेना पड़ता था, जिससे ग्रन्थ न तो यथा काल प्रकाशित हो पाते थे, न ही मुद्रण सन्तोष जनक हो पाता था। सन् १९६७ में ट्रस्ट ने अपना प्रेस स्थापित कर लिया जिस में दो छोटी मशीनों की व्यवस्था की गई। इस से वैदिक ग्रन्थों के सस्वर तथा शुद्ध

मुद्रण में बहुत सहायता मिली। लगभग दस वर्ष तक श्री पं० महेन्द्र जी शास्त्री ने मुद्रण-संशोधन का कार्य अत्यन्त उत्तम रीति से सम्पन्न किया। इस समय इस कार्य को श्री पं० ओंकार जी कर रहे हैं। प्रेस के कर्मचारियों में सर्वश्री तुलसीराम कश्यप, रामकिशन सरोहा, ओंकार चन्द, सुभाष चन्द, देशराज कथूरिया, बालकिशन कौशिक, दयाशंकर और बालकिशन सरोहा (मशीन मैन) अत्यन्त परिश्रम एवं निष्ठा से कार्य करते रहे हैं। ट्रस्ट के प्रेस में प्रायः अपनी पुस्तकें ही छापी जाती हैं, किन्तु अन्य प्रकाशकों की आर्ष वाङ्मय सम्बन्धी पुस्तकें भी सुविधानुसार यहां छपती रही हैं। गत वर्षों में अपनी पुस्तकों के अतिरिक्त निम्न वर्णित पुस्तकें इस प्रेस में छापी गईं।

१. विष्णुसहस्रनाम सत्यभाष्य
२. महाभाष्य हिन्दी व्याख्या
३. संस्कृत धातुकोष
४. ऋग्वेदभाष्य तीन भाग
५. अनासक्तियोग
६. अट्ठारह सौ सत्तावन और स्वामी दयानन्द
७. वैदिक व्याकरण
८. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास तीन भाग
९. गोपथ ब्राह्मण
१०. अथर्ववेद भाष्य
११. सत्सङ्ग सुधा
१२. निरुक्त श्लोक-वार्तिक आदि

ट्रस्ट को आर्थिक सहयोग

देश-विभाजन के पश्चात् आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी को झरिया निवासी श्री बाबू अर्जुनलाल जी अग्रवाल ने दो वर्ष तक पांच सौ रुपये मासिक सहायता दे कर ट्रस्ट की प्रवृत्तियों के पुनः आरम्भ में बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया।

बहालगढ़ में जिस भूमि पर जिज्ञासु स्मारक भवन स्थित है, वह भूमि नाम मात्र के वार्षिक किराये पर ९९ वर्ष के लिये और उस पर निर्मित पुस्तकालय भवन तथा दो कमरे श्री रामलाल जी कपूर के ज्येष्ठ पुत्र स्वर्गीय श्री रूपलाल जी कपूर के परिवार की ओर से ट्रस्ट को भेंट किये गये हैं। इस भवन का तात्कालिक मूल्य लगभग पैंतीस हजार रुपये था। दो कमरों के निर्माणार्थ श्री देवीचन्द जी मेहरा की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती जी और उनकी सम्बन्धी श्रीमती धनवती जी ने क्रमशः छह तथा पांच हजार रुपये दिये थे। एक कमरे का निर्माण श्री बा० प्यारेलाल जी कपूर

तथा एक कमरे का निर्माण श्री वाबू ज्ञानचन्द जी के परिवार की ओर से कराया गया। इसी प्रकार अन्य कमरों तथा तथा यज्ञशाला का निर्माण भी ट्रस्ट परिवार से सम्बद्ध विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया। इस समय जिज्ञासु स्मारक भवन में पुस्तकालय-भवन के अतिरिक्त तेईस छोटे-वड़े कमरे हैं।

अष्टाध्यायी भाष्य के निर्माण तथा प्रकाशन के व्यय मध्ये झरिया निवासी श्री वाबू मदनलाल जी अग्रवाल ने लगभग दस हजार रुपये की सहायता प्रदान की थी। सन् १९६४ में आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के देहावसान के पश्चात् अष्टाध्यायी-भाष्य की पूर्त्ति के लिए श्री देवीचन्द जी मेहरा ने तेरह हजार रुपये और श्री गोविन्दलाल जी वंसीलाल जी ने स्वयं तथा अपने भ्राताओं द्वारा तीन हजार रुपये प्रदान किये। श्रीमती माता भागवन्ती जी ने संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उत्तम प्रकाशन के लिए दस हजार रुपये दिये थे। इनके अतिरिक्त स्वर्गीय आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के भक्तों एवं प्रेमी सज्जनों ने लगभग पचपन हजार रुपये प्रकाशन के लिए दिये। श्री माता प्रेमदेवी जी दरगन ने श्री आसकरण सरदाना की प्रेरणा से अपने स्वर्गीय पतिदेव श्री केशवचन्द्र जी दरगन की स्मृति में वैदिक नित्यकर्मविधि तथा सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन के लिए अठारह हजार रुपये प्रदान किये। इन दोनों ग्रन्थों के कलेवर में मुद्रणकाल में वृद्धि हो जाने और कागज के मूल्य वढ़ जाने के कारण ट्रस्ट को अपनी ओर से भी छह हजार रुपये लगाने पड़े। ऋषि दयानन्द के तथा उनको अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखे गये पत्रों और विज्ञापनों के चार भागों के मुद्रण में आर्य जनता ने लगभग २० हजार रुपयों की सहायता की।

ट्रस्ट के माननीय सदस्य स्वर्गीय श्री हरिश्चन्द्र जी वत्रा ने सत्यार्थ-प्रकाश और संस्कारविधि के आर्यसमाज शताब्दी-संस्करण के प्रकाशन में सहायता के रूप में १० हजार रुपये प्रदान किये। इन पुस्तकों के संस्करण पर ट्रस्ट के भी पांच हजार रुपये अतिरिक्त व्यय हुए। झरिया निवासी श्री वाबू अर्जुनदेव जी अग्रवाल ने यजुर्वेदभाष्य विवरण द्वितीय भाग के प्रकाशन के लिए पांच हजार रुपये सहायता के रूप में प्रदान किये। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में कुल व्यय लगभग ग्यारह हजार रुपये हुआ।

श्री वाबू सुदेश कुमार जी कपूर ने लगभग छह हजार रुपये भवन निर्माण तथा प्रेस की कटिंग मशीन खरीदने के लिए दिये। श्रीमती कान्ता जी कपूर ने वैदिक ग्रन्थों के मुद्रणार्थ स्वरवाला वम्बईया टाइप खरीदने के

लिए लगभग चार हजार रुपये प्रदान किये। अभी-अभी विदुरनीति के प्रकाशन के लिये श्रीमती कान्ताजी तथा उनकी माता जी ने पन्द्रह हजार रुपये दिये हैं।

श्रीमती माता शुभकारो जी वानप्रस्थी ने छात्रवृत्ति के लिए बारह सौ रुपये दो वर्ष के लिए दिये। प्रागपुर (कांगड़ा) निवासी श्री पृथिवीचन्द्र जी ने दस हजार रुपये धरोहर के रूप में ट्रस्ट को इसलिए दिये कि उनके व्याज से दो छात्र विद्या अध्ययन करते रहें। रा सा० चौधरी प्रतापसिंहजी तथा अन्य कई आर्यजन यथाशक्ति विद्यालय की सहायता कर रहे हैं।

स्वर्गीय आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के अन्तेवासी श्री पं० सत्यदेव जी वासिष्ठ (भिवानी) ने पैंतीस सहस्र लागत की निम्नलिखित मुद्रित पुस्तकें ट्रस्ट को उत्तराधिकार सहित भेंट की—

१. विष्णुसहस्रनाम सत्यभाष्य चार भाग, आध्यात्मिक वैदिक व्याख्या
२. नाडी तत्त्व दर्शन—नाडीज्ञान विषयक अपूर्व ग्रन्थ।
३. सत्याग्रह-नीति काव्य—हैदराबाद सत्याग्रह के समय जेल में लिखा गया ग्रन्थ।

हम उपर्युक्त सभी दान-दाता एवं सहयोगी महानुभावों का हृदय से धन्यवाद करते हैं जिनके सहयोग से ट्रस्ट वैदिक धर्म एवं वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में अग्रसर हो सका।

ट्रस्ट की वर्त्तमान आर्थिक स्थिति

सन् १९२८ में ट्रस्ट की स्थापना आठ हजार रुपये नकद तथा बारह हजार रुपये मूल्य के एक भवन से हुई थी। ट्रस्ट के संस्थापक चारों परिवार ट्रस्ट के व्यय के लिए वार्षिक अनुदान देते रहे हैं। भवन का किराया स्वल्प ही प्राप्त होता है। सन् १९६४ में आचार्यवर श्री जिज्ञासु जी के समय ट्रस्ट के संस्थापक परिवार ट्रस्ट को लगभग दस हजार रुपये वार्षिक सहायता देते रहे थे। उस के पश्चात् मंहगाई के साथ साथ अनुदान की राशि भी बढती रही है। इस समय लगभग बीस हजार रुपये वार्षिक ट्रस्ट के संस्थापक परिवारों की ओर से ट्रस्ट को प्राप्त हो रहे हैं। ट्रस्ट के स्टाक में लगभग डेढ लाख रुपये मूल्य की मुद्रित पुस्तकें विद्यमान हैं। पुस्तकों की विक्री शनैः शनैः होती हैं, इसलिए व्यय की पूर्ति में कठिनाई उपस्थित हो जाती है। इस समस्या के स्थायी हल के लिए ट्रस्ट के माननीय प्रधान

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने ट्रस्ट के स्थायी-कोष की योजना ट्रस्टियों एवं ट्रस्ट के प्रेमी शुभचिन्तकों के सामने रखी है। स्थायी-कोष का लक्ष्य ढाई लाख रुपये रखा गया है। यह धन किसी बैंक में जमा करा दिया जायेगा और इसके व्याज से ट्रस्ट के व्यय की पूर्ति की जायेगी। स्थायी-कोष का आरम्भ हो गया है और अब तक उसमें बासठ हजार रुपये प्राप्त हो चुके हैं। ट्रस्ट-परिवार को इस में न्यून से न्यून एक लाख रुपये का अंश दान करना हैं।

आयकर में छूट

अनेक वर्षों के प्रयत्न के पश्चात् श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट को आयकर में छूट का प्रमाण पत्र प्राप्त हो गया है। तदनुसार ट्रस्ट को दिये गये दान की राशि पर दानदाता को कर नहीं देना पडेगा। दान-दाताओं को इस सुविधा का यथेष्ट लाभ उठा कर ट्रस्ट की प्रगति में सहयोग प्रदान करना चाहिये।

भावी योजना

१. ट्रस्ट की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योजना है—आर्ष-वाङ्मय का उद्धार। इस के अन्तर्गत दुर्लभ आर्ष-ग्रन्थों तथा उन की व्याख्याओं को क्रमशः प्रकाशित किया जायेगा। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अभी प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहे हैं उन का प्रकाशन और जिन ग्रन्थों के पुराने संस्करण अनुपलब्ध हैं, उन्हें सुलभ कराने का प्रयत्न किया जायेगा। इस दिशा में कुछ कार्य आरम्भ कर दिया गया है. गोपथब्राह्मण प्रकाशित हो चुका है, अथर्ववेद पैप्पलाद संहिता तथा ऋक्सर्वानुक्रमणी वेदार्थदीपिका टीका सहित के सम्पादन का कार्य चल रहा है।

२. आर्ष-ग्रन्थों की नवीन व्याख्याएं तैयार करा कर प्रकाशित की जायेंगी। आर्यभाषा में अनुवाद एवं व्याख्याओं से इन ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार में महती सहायता मिलती है। यह तथ्य महाभाष्य तथा शाबर-भाष्य की हिन्दी व्याख्याओं से विशेषतः प्रकट हुआ है। विद्वत्समाज में इन व्याख्याओं का यथेष्ट आदर हुआ है।

३. ऋषि दयानन्द द्वारा आरम्भ किये गये वेदभाष्य के कार्य को आगे बढ़ाया जायेगा। ऋषि शैली का अनुसरण करते हुए अवशिष्ट वेदभाष्य की सम्पूर्त्ति की जायेगी।

४. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में बिखरे हुए मन्त्रों की व्याख्याओं का संकलन कर के प्रकाशित की जायेंगी। इससे अवशिष्ट वेदभाष्य की रचना में भी सहायता मिलेगी।

५. ऋषि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थों में मन्त्रों की व्याख्या के प्रसङ्ग में जो पदार्थ उपलब्ध होते हैं, उनका संकलन कर वैदिक पदार्थ कोश की रचना तथा प्रकाशन कराया जायेगा।

६. आयुर्वेद के अध्यापन तथा तदनुसार चिकित्सा को व्यवस्था करने की योजना विचाराधीन है। उसके लिए स्वल्प आरम्भ शीघ्र ही किया जायेगा।

हमारी तात्कालिक आवश्यकताएं

१. ट्रस्ट के प्रकाशन व्यय को कम करने के लिए न्यूनातिन्यून १८× २२ आकार की सिलेण्डर मशीन का होना अत्यन्त आवश्यक है। इस से छपाई व्यय में आधी कमी हो सकती है और प्रेस से लगभग एक हजार रुपये मासिक की अतिरिक्त आय हो सकती है। इस पर लगभग तीस हजार रुपये व्यय होंगे, किन्तु इससे ट्रस्ट को आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

२. आश्रम की भूमि में गहरे गड्ढों को मिट्टी से भरने तथा चार-दीवारी के निर्माण में लगभग दस हजार रुपये व्यय होंगे।

आप का सहयोग

ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे शुभ कार्यों में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। आप के स्नेह एवं सहयोग से ही ट्रस्ट ने सम्मानित स्थान प्राप्त किया है। भविष्य में भी आपका सहयोग ही ट्रस्ट को अपने लक्ष्य को प्राप्ति में समर्थ बना सकता हैं। आपका सहयोग आगे लिखे प्रकार से हो सकता है—

१. ट्रस्ट के स्थायी कोष में आप का सात्त्विक दान ट्रस्ट को आर्थिक कठिनाईयों ये मुक्त कर सकता है। अतः इस कोष में यथाशक्ति दान दें। ट्रस्ट आप को यह विश्वास दिलाता है कि आप के धन का सदुपयोग वैदिक धर्म एवं वाङ्मय के प्रचार-प्रसार में आप की इच्छा के अनुसार ही किया जायेगा।

२. आप अपने किसी प्रियजन की स्मृति को चिर-काल तक स्थायी रखने के लिए भवन-निर्माण में सहयोग दे सकते हैं। भवन में उपयुक्त स्थान पर आप के इच्छानुसार स्मृति-पट्टिका लगाई जायेगी।

३. इसी प्रकार अपने प्रियजन की स्मृति में आप किसी विशेष वैदिक ग्रन्थ का प्रकाशन करा सकते हैं। ग्रन्थ में आप के निर्देशानुसार स्मृति-पत्र दिया जायेगा।

४. ट्रस्ट के पास अत्यन्त उपयोगी वैदिक पुस्तकालय है। आप उसे नवीनतम शोधसाहित्य भेंट कर के समृद्ध कर सकते हैं।

५. यदि आप के पास दुर्लभ वैदिक ग्रन्थ (हस्तलिखित या मुद्रित) हों, तो उन्हें ट्रस्ट को भेंट कर सकते हैं अथवा स्वल्प मूल्य लेकर दे सकते हैं जिस से वे सुरक्षित रहें और विद्वज्जन उन से लाभान्वित हो सकें।

६. आप वेदवाणी मासिक पत्रिका के स्थायी ग्राहक बन कर वेदवाणी के व्यय में होने वाले ट्रस्ट के घाटे की पूर्त्ति करने में सहायक बन सकते हैं। केवल ढाई सौ रुपये (विदेश में पांच सौ पचास रुपये) दे कर आप वेदवाणी के स्थायी ग्राहक वन सकते हैं।

७. अपने क्षेत्र में वेदवाणी के अधिक से अधिक ग्राहक वना कर और अपने संपर्क में आने वाले सज्जनों को ट्रस्ट के प्रकाशनों को खरीदने के लिए प्रेरित कर के आप ट्रस्ट को सहयोग दे सकते हैं।

८. ट्रस्ट के प्रकाशनों को स्वयं खरीद कर और अपने प्रभाव वाली संस्थाओं से खरीदवा कर आप ट्रस्ट की प्रगति में सहायक वन सकते हैं, क्यों कि अगले प्रकाशन तभी आरम्भ हो सकते हैं जब पिछले प्रकाशित ग्रन्थ विक जायें।

९. पाणिनि महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए छात्र-वृत्ति तथा वस्त्र-पुस्तक आदि प्रदान करके छात्रों को चिन्ता-मुक्त कर सकते हैं। इस समय प्रत्येक छात्र को पचास साठ रुपये मासिक छात्र-वृत्ति दी जा रही हैं, जो महंगाई को देखते हुए पर्याप्त नहीं है। अब इसे पिचहत्तर रुपया मासिक करना होगा।

१०. विद्वान् लेखक अपने आध्यात्मिक, सामाजिक, सैद्धान्तिक, स्वास्थ्य विषयक तथा अनुसन्धानात्मक लेख वेदवाणी में प्रकाशनार्थ भेज कर सम्पादक के भार को हल्का कर सकते हैं।

उपसंहार

अत्यन्त सीमित साधनों से उच्च पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगभग ५३ वर्ष पूर्व जिस रामलाल कपूर ट्रस्ट रूपी बीज का आरोपण किया

गया था, वह आर्य-जनों के स्नेह एवं सहयोग से सिक्त हो कर आज वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उस को समकालिक संस्थाएं प्रायः मार्ग से विचलित हो गई हैं। अपनी ओर से इस संस्था के संचालकों एवं कर्मचारियों ने सात्त्विक भाव से वैदिक वाङ्मय को शुद्ध सुन्दर तथा प्रामाणिक रूप में आर्य जनता के सन्मुख रखने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास में कहां तक सफल हुए हैं, इससे आप भली-भांति परिचित हैं। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आप उदार हृदय से हमें पूर्ववत् सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आप का प्रेमपूर्ण सहयोग प्राप्त करके ट्रस्ट भविष्य में अधिक उत्साह से वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में प्रवृत्त होगा और वैदिक धर्म एवं संस्कृति के रक्षण में यथेष्ट अंश दान करेगा।

मन्त्री—

श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट

———

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट के समस्त प्रकाशनों
का
प्राप्ति-स्थान

१-रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत (हरयाणा)।

२-रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर मर्चेण्ट्स, गुरु बाजार, अमृतसर।

३-रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर-मर्चेण्ट्स, नई सड़क, देहली।

४-रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर मर्चेण्ट्स, बिरहाना रोड़, कानपुर।

५-रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर मर्चेण्ट्स, ५३ सुतार चाल, बम्बई।

६-शान्त कपूर एण्ड संस, १२/८, गली खारी कुवां, चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

७-डा० शंकरसिंह आर्य, वैदिक साहित्य भण्डार, द्वारकापुरी चाल में, इन्दौर।

८-श्री हरिकिशन मलिक जज, सी ४, सी० सी० कालोनी, दिल्ली।